ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

डेयरी पशुओं में सफल टीकाकरण का महत्व एवं प्रबंधन

डॉ संजय कुमार मिश्र
उप निदेशक (पशुधन विकास)
पशुपालन निदेशालय उत्तर प्रदेश, लखनऊ

सफल डेयरी व्यवसाय के लिए स्वास्थ्य सबसे महत्वपूर्ण कारकों में से एक है। पशुओं को जीवाणु जनित एवं विषाणु जनित संक्रामक रोगों से बचाने के लिए पशुओं में टीकाकरण एक अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य है। यदि पशुपालक उचित समय पर टीकाकरण करवाए तो पशुओं को न केवल भयानक बीमारियों से बचाया जा सकता है वरन् उनके दुग्ध उत्पादन में गिरावट को भी रोका जा सकता है। टीकाकरण संक्रामक रोगों से जुड़े उपचार की लागत को कम करके पशुपालकों के आर्थिक बोझ को कम करने में सहायता करता है। टीकाकरण न करवाने वाले पशुपालकों को पशुओं की मृत्यु से आर्थिक नुकसान सहन करना पड़ता है। इसके अतिरिक्त पशुओं में कई ऐसी बीमारियां होती हैं जिनका संक्रमण मनुष्यों में भी फैल सकता है जिन्हें जूनोटिक रोग कहते हैं। ऐसी स्थिति में यह आवश्यक हो जाता है कि पशुओं के टीकाकरण के द्वारा जूनोटिक बीमारियों का पशुओं से मनुष्यों में संक्रमण रोका जाए। टीकाकरण की उपयोगिता एवं अनिवार्यता को देखते हुए केंद्र सरकार ने राष्ट्रीय रोग नियंत्रण कार्यक्रम अर्थात एनएडीसीपी सन 2019 से संचालित किया है जिसके अंतर्गत देश के समस्त डेयरी पशुओं को टीकाकरण निश्चित समय अवधि के अंतर्गत अनिवार्य है।

डेयरी पशुओं में चार विभिन्न बीमारियों का टीकाकरण किया जाता है-

1. खुर पका मुंह पका रोग /एफएमडी-

यह एक विषाणु जनित रोग है । इस रोग में पशु को अत्यंत तीव्र बुखार 104 से 105 डिग्री फारेनहाइट होता है। पशु के मुंह एवं पैरों की खुरि में छाले पड़ जाते हैं जो कुछ दिन बाद फुट कर घाव का रूप ले लेते हैं। जिससे पशु को चारा खाने में एवं पैरों से चलने में परेशानी होती है अर्थात पशु लंगड़ा हो जाता है । भारत सरकार ने राष्ट्रीय पशु रोग उन्मूलन कार्यक्रम के अंतर्गत सन 2025 तक खुर पका मुंह पका रोग को नियंत्रित करने और सन 2030 तक समस्त पशुओं से खुर पका मुंह पका रोग का उन्मूलन करने का लक्ष्य रखा है।

एक कहावत है कि उपचार से बचाव बेहतर है। इसके लिए पशुओं में टीकाकरण किया जाता है।

चार माह एवं उसके ऊपर के समस्त पशुओं में खुर पका मुंह पका रोग का टीकाकरण किया जाता है परंतु 8 माह से ऊपर गर्वित गाय एवं भैंस में उपरोक्त टीकाकरण नहीं किया जाता है। इसकी पहली खुराक 4 महीने की उम्र पर लगती है और उसके एक माह पश्चात बूस्टर खुराक लगाई जाती है। तत्पश्चात प्रत्येक 6 माह के उपरांत खुर पका मुंह पका रोग का टीकाकरण पशुओं में किया जाता है।

*"एक भी **pashu** छूटा, तो सुरक्षा चक्र टूटा "*

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

2. गला घोटू/ हेमोरेजिक सेप्टीसीमिया-

यह एक जीवाणु जनित अत्यंत संक्रामक रोग है जिसमें पशु को तीव्र बुखार होता है जो कि 105 से 106 डिग्री फारेनहाइट तक हो सकता है। यह स्वतंत्र तंत्र का रोग है जिसमें पशु की सांस नली में सूजन आ जाती है जो अंदर की तरफ भी होती है और बाहर गर्दन की तरफ भी दिखाई देती है जो कि छूने पर गर्म होती है। यदि पशु को समय पर उसका समुचित उपचार नहीं मिलता है तो पशु की मृत्यु भी हो जाती है। इस रोग से बचाव के लिए गला घोटू का टीका 6 माह एवं उससे ऊपर के पशुओं मे बरसात से पूर्व लगाया जाता है। इस रोग में पशु के मुंह से गले से घुंरू घूर की आवाज आती है इसलिए इसे घुरका भी कहते हैं। बूस्टर डोज प्रतिवर्ष लगाई जाती है।

3. संक्रामक गर्भपात/ ब्रूसेलोसिस-

इस बीमारी मैं गर्भावस्था के अंतिम त्रैमास में पशु का गर्भपात हो जाता है इसके बाद में जेर भी रुक जाती है एवं गर्भाशय का संक्रमण हो जाता है एवं अगले व्यात में गर्भ न रुकना मुख्य समस्या बन जाती है। गर्भपात वाले पशुओं से महिलाओं एवं बच्चों को दूर रखें। प्रभावित पशुओं का दूध अच्छी तरह उबाल कर ही प्रयोग करें क्योंकि यह एक जूनोटिक रोग है और मनुष्यों में माल्टा फीवर एवं अनडुलेंट फीवर उत्पन्न करता है।

4. लंगड़ा बुखार/ BQ

इस बीमारी में भी पशु को तीव्र बुखार होता है और मांसल भागो जैसे पुट्ठे पर मांसपेशियों में सड़न हो जाती है और उसमें गैस की आवाज चूर चूर कर आती है इस कारण से इस रोग को चूरचूररिया भी कहा जाता है। बचाव के लिए बरसात से पहले 6 माह से अधिक के पशुओं में टीकाकरण किया जाता है।

पशुओं में टीकाकरण से लाभ-

टीकाकरण द्वारा हमारे पशुओं की संक्रामक रोगों से रक्षा होती है। टीकाकरण के द्वारा पशु जन्म/ जूनोटिक बीमारियों का पशु से मनुष्य में संक्रमण रोका जा सकता है। टीकाकरण पशु स्वास्थ्य और पशु कल्याण दोनों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। टीकाकरण पशु प्रजनन को प्रभावित कर संक्रामक गर्भपात से पशुओं की रक्षा करता हे और पशु पालक को आर्थिक नुकसान से बचाता है। पशुधन को समुचित रूप से प्रबंधित करने के लिए समय समय पर टीकाकरण करना अति आवश्यक है। बीमारी के संचरण की श्रंखला को तोड़ने के लिए झुंड प्रतिरक्षा एक महत्वपूर्ण कारक है। टीकाकरण के माध्यम से सुरक्षित एवं कुशल खाद्य उत्पादन होता है। टीकाकरण द्वारा खाद्य जनित रोगों के संचरण में कमी आती है। इस प्रकार पशुओं में टीकाकरण डेयरी फार्म में रुग्णता और मृत्यु दर को कम करने में सहायता करता है और पशु कल्याण में सुधार करने में योगदान देता है। यह न केवल प्रतिजैविक अर्थात एंटीबायोटिक औषधियों की लागत को कम करता है बल्कि मनुष्यों के लिए स्वस्थ उत्पाद प्राप्त करने के लिए भी अति आवश्यक है।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

डेयरी पशुओं में सफल टीकाकरण हेतु टीकाकरण से पूर्व निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैं-

पशुओं के आसपास के स्थान को स्वच्छ और सुरक्षित रखें इससे संक्रमण का खतरा कम हो जाता है। टीकाकरण से पूर्व पशुओं को पौष्टिक आहार देना चाहिए। टीकाकरण से पूर्व पशु के स्वास्थ्य की जांच अति आवश्यक है क्योंकि टीकाकरण केवल स्वस्थ पशुओं में किया जाता है जबकि बीमार पशुओं का टीकाकरण नहीं करवाना चाहिए। पशुपालक को पशुओं के रोगों के लक्षणों की पहचान होना अति महत्वपूर्ण है। गर्मियों में पशुओं को पर्याप्त पानी पिलाना चाहिए और उन्हें ठंडे स्थान पर रखना चाहिए। टीकाकरण से 15 दिन पूर्व कृमि नाशक औषधि पशुओं को अवश्य देना चाहिए जिससे कि टीकाकरण की गुणवत्ता उच्च बनी रहे एवं रोग प्रतिरोधक क्षमता पूर्ण रूप से विकसित हो। संभव हो तो प्रत्येक बड़े पशु को 50 ग्राम मिनिरल मिक्सचर एवं 50 ग्राम नमक प्रतिदिन देना चाहिए।

डेयरी पशुओं में टीकाकरण के पश्चात तनाव को कम करने के लिए कुछ मुख्य उपाय किए जा सकते हैं जो निम्नवत हैं-

टीकाकरण के पश्चात पशुओं की समुचित देखभाल करने से उनके स्वास्थ्य को सुधारने में सहायता मिलती है एवं पशु का तनाव कम होता है। पशुओं को स्वच्छ पानी एवं पूर्ण समुचित पोषण देना अत्यावश्यक है। जिसमें पर्याप्त पोषक तत्व अर्थात प्रोटीन , कार्बोहाइड्रेट, विटामिन, मिनरल्स प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हो। पशुओं को नियमित व्यायाम कराना भी महत्वपूर्ण है। परंतु पशुओं को पर्याप्त समय आराम करने देना आवश्यक है क्योंकि पशु टीकाकरण के पश्चात थकान व डर महसूस करते हैं अतः उन्हें प्राकृतिक वातावरण में विश्राम करने देना चाहिए। पशुओं को उचित तापमान और पर्याप्त पानी देने से उनका तनाव कम होता है। रिस्टोबल लिक्विड हर्बल अर्थात आयुर्वेदिक उत्पाद है जो कि पशु की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने के साथ-साथ तनाव को भी दूर करता है। टीकाकरण के पश्चात 50**ml** सुबह 50**ml** शाम को दिन में दो बार 5 से 10 दिन तक देना अत्यंत लाभकारी रहता है।